International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-09-2021, Accepted: 22-09-2021, Published: 06-10-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 76-78

अमृतलाल नागर का ऐतिहासिक उपन्यासः एक परिशीलन

डॉ. धनेश्वरी दुबे
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग), शासकीय इंजीनियर विश्वेश्वरैया स्नाकोत्तर महाविद्यालय कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
अमृतलाल नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यासों का ऐतिहारिक पक्ष अत्यंत राशक्त है। प्रत्येक उपन्यास भारतीय इतिहास के भिन्न–भिन्न कॉल खंडो का परिचय पाठकों को देता है। नागर जी ने अपने उपन्यासों में प्रागैतिहासिक काल से लेकर समकालीन भारत तक के इतिहास के महत्वपूर्ण पक्षों को दर्शाया है। कुछ उपन्यासों में घटनाएं ऐतिहारिक है तो कुछ मे पात्र और कुछ उपन्यासों में वातावरण ऐतिहासिक है। एक ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में नागर जी का सर्वोत्कृष्ट स्थान है।

मूलशब्दः समानुपातिक, सिलपट्ट, खींचतान, चौतन्य, अभय, काफिर, अवधूत, सख्य भक्ति आदिद्य

प्रस्तावना
उपन्यास हिन्दी साहित्य की अन्य गध विधाओं में सबसे लोकप्रिय विधा है। उपन्यास मानव समाज के वास्तविक जीवन मूल्यों, सांस्कृतिक जीवन मूल्यों एवं सामाजिक जीवन मूल्यों को स्पर्श करके उच्च जीवनादर्शों को अभिव्यक्त करता है। दरअसल उसका एक कारण यह है कि उपन्यासकार भी अंततोगत्त्वा समाज का ही एक अति संवेदन शील अंग है। अतः वह सामज में व्याप्त विदुपताओं, मान्यताओं, रुढ़ियों एवं मानव जीवन को स्पर्श करने वाली समास्याओं को अपने लेखन का विषय बनाता है। जब तक वह जीवन के संघर्षों और परिस्थितियों से गुजरता नहीं, तब तक वह उपन्यास का सर्जन नहीं कर सकता अर्थात प्रत्येक युग में उपन्यासकार युगीन चेतना के ताने बाने से जुड़ा रहता है। उन तारों की बुनावट एवं झनझनाहट से प्रभवित होकर बाद में वह जीवन की ऐसी तस्वीर का निर्माण करता है, जो कलात्मक रोचक एवं यथार्थ होती है।

ऐतिहासिक उपन्यासः अर्थ, परिभाषा एवं स्वरुप
ऐतिहासिक उपन्यास दो शब्दों के योग से बना है– इतिहास+उपन्यास। अर्थात जिस उपन्यास में इतिहास है, वह ऐतिहासिक उपन्यास कहा जायेगा। साधारणतः ऐसे उपन्यासो में अतीतकालीन पात्र, वातावरण और घटनाओं के ज्ञात तथ्यों को कल्पना से माँसल और जीवन्त बनाकर रखने का प्रयास किया जाता है। इन उपन्यासों का प्राण ऐतिहासिक वातावरण होता है। जितनी कुशलता के साथ उपन्यासकार अपने उपन्यास में ऐतिहासिक वातावरण की अभिसृष्टि कर सकें, उतना ही अधिक प्रभावशाली वह ऐतिहासिक उपन्यास होगा। यह नितान्त सत्य है कि उपन्यास इतिहास नहीं है। ऐतिहासिक उपन्यास का अर्थ और स्वरुप को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों की परिभाषाएँ दी जा रही हैं–

गोपीनाथ तिवारी के अनुसार
"जब इतिहास और कल्पना का संतुलित मिश्रण हुआ हो, जब खोजपूर्ण ऐतिहासिक अध्ययन एवं मनोरम कल्पना को एक आसन पर खड़ा करके पाणिग्रहण कराया गया हो तब हमें संतुलित उपन्यास देखने का सौभाग्य प्राप्त होता है।"[1]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार
"साधारणतः ऐसे उपन्यास जिसमें अतीतकालीन पात्र, वातावरण और घटनाओं के ज्ञानतथ्यों को कल्पना से माँसल और जीवन्त बनाकर रखने का प्रयास होता है, ऐतिहासिक उपन्यास कहते हैं।"[2]

श्री वृन्दावन लाल वर्मा के अनुसार
"ऐतिहासिक उपन्यास में उपन्यासकार को इतिहास की घटनाओं को तोड़ने–मरोड़ने का हक नहीं है।उपन्यास की रुपरेखा, रीति–रिवाज, सामाजिक चित्रण, व्यक्तिगत चरित्र आदि पूर्ण एवं समानुपातिक हों। साथ ही वह सदभावों के उद्रेक करने में सफल हो, उसमें कुछ आधुनिक समस्याएँ भी हों। तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वे सुश्रंखलित हों। ऐतिहासिक उपन्यास धर्म और आदर्श के प्रचारक हों। ऐतिहासिक उपन्यासों में पाठक को पकड़े रखने की शक्ति होनी चाहिए तथा पाठक इससे कुछ ज्ञान अर्जन भी करे।"[3]

इस प्रकार ऐतिहासिक उपन्यासों के संबंध में ऊपर जितनी परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं, वस्तुतः उनमें कोई मौलिक भेद नहीं है। सभी विद्धानों ने यह माना है कि इसमें किसी अतीत युग की कहानी होनी चाहिए। वस्तुतः ऐतिहासिक उपन्यास आवश्यक रुप से अतीत की एक कल्पित कहानी ही होती है और जिसमें इतिहास का पुट रहता है एवं जिसमें तिथियों, घटनाओं अथवा व्यक्तियों का समावेश होता है।

अमृतलाल नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यास
अमृतलाल नागर जी का इतिहास एवं पुरातत्व के प्रति लगाव उनके साहित्य प्रेम से कम महत्वपूर्ण नहीं है। इतिहास के प्रति उनका यह लगाव किसी एक कालखंड से न होकर भारत के प्राचीन इतिहास से होता हुआ मध्ययुगीन और आधुनिक इतिहास तक पहुँचता है। इतिहास संबंधी अपने ज्ञान का उपयोग उन्होंने अपने साहित्यिक निर्माण में किया है। उनके ऐतिहासिक उपन्यासों की विशिष्टता वस्तुतः उनकी सजीव ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा उसमें पाये जाने वाले सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के चित्रण में है। यधपि नागर जी द्वारा लिखे गये ऐतिहासिक उपन्यासों की संख्या अधिक नहीं है, पर उनके लिखे ऐतिहासिक उपन्यास हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। नागर जी द्वारा लिखे गये प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों में "शतरंज के मोहरें","मानस का हंस","खंजन नयन","चैतन्य महाप्रभु" विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं।

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
P.G. COLLEGE, KORBA (C. G.)
GOVT. E.V.P.G. COLLEGE KORBA